Issue: 155
10 Sept. 2020

जैनाचार

www.jainachar.com Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

lcd l r fujky l r fnxcj x# foey x#

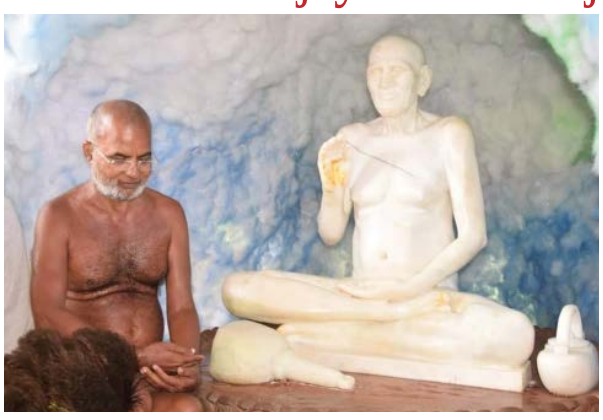

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के सानिध्य में प्रातः काल परम पुज्य निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज की 105 वी जन्म जयंती महोत्सव पर गुरुपूजन आदि पूर्वक धूमधाम से मनाया गया। पूज्य गुरुदेव श्री ने पूज्य गुरुदेव के गुणगान गाथा द्वारा जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, महापुरुष अपने आप ही महान होते है तथा जीवन में महान महान कार्यों को अंजाम देते हैं, तभी तो बड़े–बड़े महान लोग भी उन्हें स्मरण कर उनका गुणगान करते हैं। उन्हीं महान व्यक्तित्व के धनी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महामुनि राज संतो में एक ऐसे निराले संत थे। जिनका कोई एक पंथ परंपरा धर्म जाति समाज ग्राम नगर देश नहीं था उनकी दृष्टि में सारा विश्व था।

परम पवित्र सत्य धर्म मोक्ष पंत निर्ग्रन्थ जाति थी तभी तो वे एक के नहीं सभी के अपने संत थे। सभी चाहे विरोधी भी क्यों ना हो उनको गले लगाते थे, तभी तो विरोधी भी पिघलकर विरोध भाव भूल जाते थे। पूज्य गुरुदेव के अंदर सदैव आत्म साधना के साथ धर्म प्रभावना का लेकिन सबसे हटकर वे रथ यात्रा ढोल मजीरे आदि के साथ–साथ जब भी देखते थे। प्राणी आज दुखी है तो आज की परिस्थितियों से और भ्रमित होकर सत्य सत्य की पहचान से अभिव्यक्त चाहे जिस रास्ते को अपना रहा है। चाहे जिस देहरी पर सिर टेक रहा है तो वे उन्हें सही धर्म की राह करुणा दया से भी कर बताते थे। दुख दूर कर सही उपाय णमोकार मंत्र जाप प्रभु पूजन आदि धर्म कार्य बताते थे, उनकी साधना भी उत्कृष्ट थी, उन्होंने कभी पर परिचर्या में किसी भी प्रकार की समझौता कमजोरी शिथिलताओ को नहीं अपनाया। दीक्षा लेते ही गुरु आज्ञा से 4 रसों का नमक घी तेल दही का त्याग किया। कई वर्षों तक अन्य भी त्याग किया, उसमें में भी दशलक्षण के 10 10, अष्टानिका के 8–8 और चातुर्मास में एक आहार एक वृत्त का क्रम चलता रहा, सिद्ध क्षेत्रों आदि का ध्यान 200 विभिन्न विभिन्न मंत्रों की जाप स्वाध्याय आदि करते थे। ध्यान में इतने एकाग्र होते थे कि भीषण ठंडी में भी अग्नि धारणा से पसीना आने लगता था। वे साधना के हिमालय थे इसलिए उन्हें अनेकों सिद्धियां स्वयमेव सिद्धि थी, जिनमें वाक् सिद्धि और निमित्त ज्ञान तो विश्व प्रसिद्ध है, जो कहते थे वही होता था। रत्नत्रय की साधना आराधना के मोक्ष मार्ग पर स्वपर लगाने वाले परम उपकारी हमारे गुरुदेव थे, जिन्होंने मुझे सदैव सच्ची दिशा संभल साहस प्रेरणा प्रोत्साहन आदि दिया। जिनके उपचारों का निरंतर हम स्मरण करते हैं और करते रहेंगे। उनके चरणों में इस अवसर पर वंदन नमस्कार करते हुए यही प्रार्थना करते हैं, आपने इस रत्नत्रय के मार्ग में लगाया है उस पर तब तक हिम्मत देना जब तक की निर्वाण की प्राप्ति ना हो।

–कोडरमा से राज कुमार अजमेरा/नवीन गंगवाल, संकलन अभिषेक जैन लुहाडिया रामगंजमंडी

नाम विमल, काम विमल, विमल गुण के धारी...

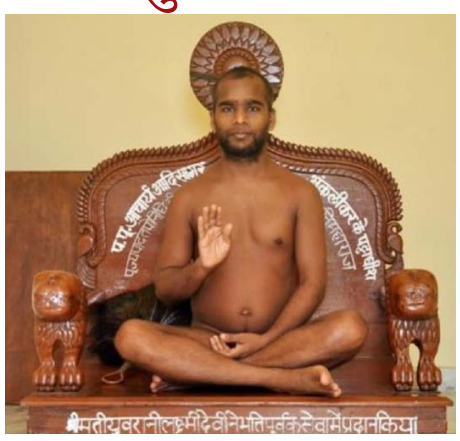

मोक्ष के प्रेमी हमने कर्मो से लड़ते देखे,
मखलम पर सोने वाले कांटो पर चलते देखे,
सरसों के दाने जिसके बिस्तर पर चूभते देखे,
काया की सुध नहीं, कीचड़ तन खाते देखे,
भीम व अर्जुन जिनके धन का ना पार था,
आत्म उन्नति के कारण, अग्नि में जलते देखे,
सेठ सुदर्शन जीव, रानी ने जिन्दा जलाया,
शील को नहीं छोड़ा, शुळी पर चड़ते देखे,
पारसनाथ स्वामी इसी भव मोक्ष गामी,
कर्मो ने नहीं छोडा, पत्थर तक पडते देखे।

आत्मार्थीयों! जिनदीक्षा का निरूपन प्रभु कर रहे है। जनम लेना बहुत आसान है, उसको निभाना, सहीं जीवन जिना बहुत कठिन है। यह जनम लेकर संयम पथ पर चलना साधु पुरूषों का ही काम है। कल आचार्य श्री विमलसागरजी का जनमदिवस था। अगर उन्होंने जन्म लेकर संयम नहीं लिया होता, स्व और पर उपकार नहीं किया होता, साधना नहीं की होती तो आज उन्हें कौन याद करता? आचार्य विमलसागरजी महाराज ने कोसमा जन्म लिया और आचार्य महावीरकिर्तीजी से दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग प्रशस्त किया। वे वात्सवल्य के धनी थे, अथाह ज्ञान के ज्ञाता थे। उन्हों ने अपने संपूर्ण जीवन में भेद विज्ञान की साधना की और शाश्वत तीर्थाधिराज सम्मेदशिखरजी में आत्मज्ञान पूर्वक समाधि साधी।

ज्ञानियों! जिनदिक्षा अर्थात् जो नियम स्थान और परिग्रह के मोह से रहित है, बाईस परिषहों को जितने वाली है, कषाय से रहित है तथा पाप के आरम्भ से अर्थात् पापपूर्ण के आरम्भ से मुक्त है ऐसी दीक्षा कही गयी है। ऐसी दीक्षा आदिनाथ से लेकर आदिसागर तक, महावीर स्वामी से लेकर महावीर कीर्ति तक, वीर भगवान से लेकर वीरसागरजी महाराज तक और शांतिनाथ से लेकर आचार्य शांतिसागरजी महाराज तक सभीने ऐसी ही जिनदीक्षा स्वीकारी है। ज्ञानियों! यह सारे महापुरूष मखमल के गद्दे पर सोनेवाले होते है पर दीक्षा के पश्चात् काष्ट पर सोना और कांटो पर चलना तो भी समभाव है।

जीवन मरण में हानि और लाभ में मन में सदा समता रहती,
शत्रु और मित्र में कांच ओर कंचन में एकता ही मस्त रहती।

ऐसे सुकुमाल युवाओं ने भी दीक्षा ली, जिनको सरसों का दाना भी खाते देखे है। व जैन धर्म के २३वें थीर्थंकर पारसनाथ, जिनके ऊपर पूर्वभव के भाई ने वैरी बनकर उपसर्ग किया, फिर भी वे शांत भाव से सहकर प्रशांत बन गये। आचार्य परमेष्ठी श्री विमलसागरजी महाराज के जन्मदिवस पर उनके चरणों में भावभरी विनयांजलि अर्पित करते हुए...उनका नाम भी विमल था और जीवन भी विमल था। जय बोलो! आचार्य विमलसागरजी महाराज की जय!

xf.kuh vkf;dk LofLrHk"k.k ekrkth d 51 o vorj.k fnol ij 51 foèkku o 'kkfrèkkjk ,o 51 yk[k tki dk ldYi

'kHkdkeuk ifjokj dk fMftVy vfèko'ku 1 NOV dk LofLrèkke tgktij jktLFkku e

परम पूज्या स्वस्तिधाम प्रणेता गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी का 51वाँ अवतरण दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया जायेगा। इसी कड़ी में सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा अभूतपूर्व आयोजन किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत 51 दिन तक गुरु माँ अवतरण दिवस तक 51 विधान व 51 शांतिधारा की जायेगी। वहीं समाजजन द्वारा ॐ ह्रीं अर्हम श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः की 51 लाख जाप का संकल्प लिया। इस आयोजन का आगाज 11 सितम्बर 2020 से 31 अक्टूबर 2020 तक होगा। इसी अनुपम बेला में शुभकामना परिवार का डिजिटल अधिवेशन 1 NOV 2020 को आहूत होगा।

हम सब जानते है स्वस्तिभूषण माताजी की प्रेरणा ही जो आज देश की अनुपम कृति के रूप में स्वस्तिधाम जहाजपुर है, जहाँ विराजित हैं मुनिसुव्रत बाबा। सचमुच एक बिरली साधिका ही कर सकती है, मै तो यही कहूँगा यह स्वस्तिभूषण जी प्रेरणा ही अजब नज़ारा दिखा रही है, यहां की छटा है अदभुत निराली हम धन्य है ऐसी गुरु माँ के काल में हमने जन्म लिया। सचमुच विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज जी ने दीक्षा उपरांत नामकरण किया स्वस्तिभूषण माताजी जो सचमुच सार्थकता सिद्ध करता है। स्वस्ति का आशय मंगल से गुरु माँ स्वस्तिभूषण माताजी सचमुच मंगल करने वाली है जिसका उदाहरण स्वस्तिधाम जहाजपुर है।

अभिषेक जैन लुहाडीया रामगंजमण्डी

fgnh fnol ij vk;ktu

कक्षा–1 से 12वीं के विद्यार्थियों के लिए हिंदी दिवस पर–डां आशीष जैन आचार्य, (राष्ट्रपति सम्मानित) शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मोराजी सागर, समन्वय डां अरविंद कुमार शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरेली रायसेन संयोजक अरूण शास्त्री, शासकीय हाईस्कूल इमलिया, जबलपुर, द्वारा समारोह में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है जो 11 सितंबर से 15 सितंबर तक चलेंगी।

प्रतियोगिताएं.....1–आचार्य बिनोबा भावे जयंती व्याख्यानमाला 2–प्रश्न हमारे उत्तर आपके 3–लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 4–कवि सम्मेलन, छात्रों द्वारा 5–हिंदी हैं हम वतन (कार्यक्रम) 6–लोकोक्ति और मुहावरे 7–जो जीता वही सिकंदर 8–हिंदी लिखित प्रश्नोत्तरी 9–कहानी सुनाओ 10–स्पेशल ड्राईंग प्रतियोगिता(सभी ड्राइंग फेसबुक पर डाली जायेगी) प्रतियोगिताओं के परिणाम 16–09–2020 को घोषित किया जायेगा। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे। यह कार्यक्रम मध्यप्रदेश शासन द्वारा शासकीय स्कूल के प्रति सादर समर्पित है। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों का रचनात्मक कौशल विकसित करना है।

मीना विवेक जैन वारासिवनी